ISWK SHARING KNOWLEDGE

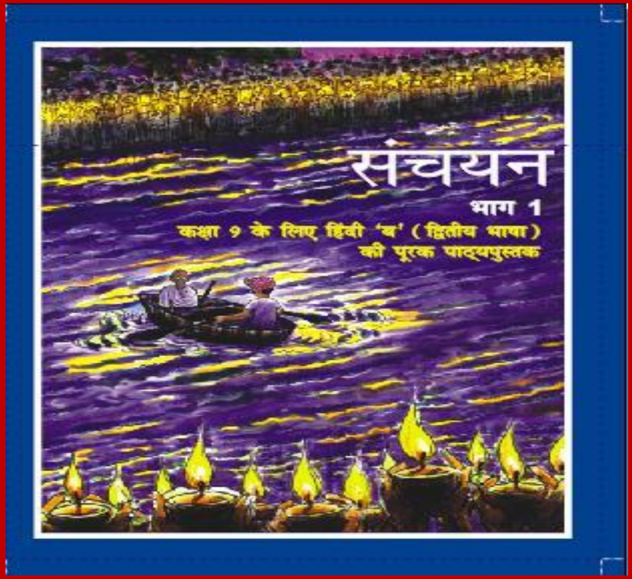

©ISWK

लेखिका – परिचय

महादेवी वर्मा का जन्म 1907 में 26 मार्च को उत्तर प्रदेश के फरूखाबाद नामक स्थान पर हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा जबलपुर में और उच्च शिक्षा इलाहाबाद में हुई। प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या थीं। उन्होंने नारी शिक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। महादेवी जी का संपूर्ण काव्य साहित्य वेदनामय है तो गद्य साहित्य मानवीय अनुभूतियों को अपने में समाहित किए हुए है। समय-समय पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार, पद्मभूषण एवं पद्मविभूषण पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। स्वभाव से ही संवेदनशील महादेवी वर्मा पशु-पक्षी के प्रति दया और प्रेम की भावना रखती थी। उनका निधन 11 सितम्बर 1987 को इलाहाबाद में हुआ।

रचनाएँ – नीरजा, दीपशिखा, रश्मि, अग्निरेखा, स्मृति की रेखाएँ, मेरा परिवार आदि।

www.peartreecottage.me

स्वभाव से ही ममतामयी महादेवी वर्मा ने एक दिन बरामदे में आकर देखा कि दो कौवे एक गमले के चारों ओर चोंचों से छूआ-छूऔवल जैसा खेल खेल रहे हैं ।निकट जाकर देखा तो वहाँ गिलहरी का एक छोटा –सा बच्चा था कौवे जिसमें सुलभ आहार ढूँढ रहे थे । वह घायल गिलहरी का बच्चा निश्चेष्ट-सा गमले से चिपटा पड़ा था ।सबने कहा कि कौवे की चोंच का घाव लगने के बाद वह बच नहीं सकता ,अतः उसे वैसे ही रहने दिया जाए ।

लेकिन महादेवी वर्मा का मन नहीं माना।वे उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में ले आई , फिर रूई से रक्त पोंछकर घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया।कई घंटे के उपचार के बाद उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका।तीसरे दिन वह इतना अच्छा और आश्वस्त हो गया कि लेखिका की उँगली अपने दो नन्हे पंजों से पकड़कर , नीले काँच के मोतियों जैसी आँखों से इधर-उधर देखने लगा।तीन चार मास में उसके स्निग्ध रोएँ,झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको विस्मित करने लगीं।

महादेवी वर्मा ने जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक का रूप दे दिया और उसे गिल्लू कहकर पुकारने लगी । उन्होंने फूल रखने की एक हलकी डलिया में रूई बिछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया ।वही गिल्लू का घर बन गया ।जब लेखिका लिखने बैठती तब वह उनका ध्यान आकर्षित करने केलिए उनके पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेज़ी से उतरता ।उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता जब तक लेखिका उसे पकड़ने के लिए न उठती।

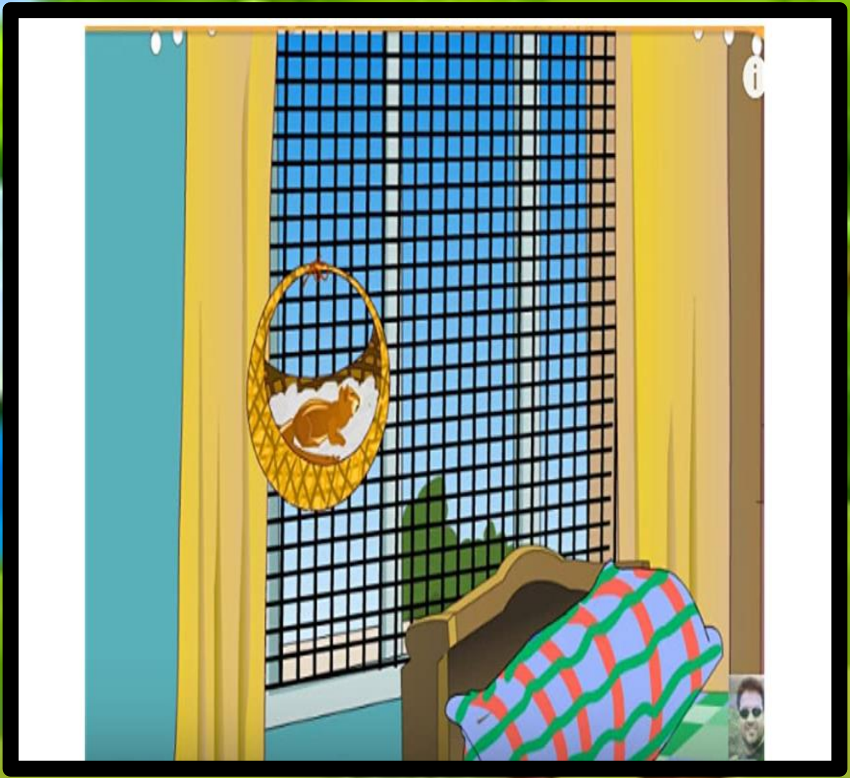

कभी लेखिका गिल्लू को पकड़कर एक लंबे लिफ़ाफ़े में इस प्रकार रख देती कि उसके अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त उसका छोटा शरीर लिफ़ाफ़े के भीतर बंद रहता।इसी स्थिति में रहकर वह अपनी चमकीली आँखों से लेखिका का कार्यकलाप देखा करता। भूख लगने पर चिक-चिक आवाज़ करता और काजू या बिस्कुट मिल जाने पर लिफ़ाफ़े के बाहर वाले पंजों से उसे कुतरता।

फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम वसंत आया। नीम-चमेली की गंध लेखिका के कमरे में हौले-हौले आने लगी। बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक-चिक करने लगीं। गिल्लू भी जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकता था। अब लेखिका को लगा कि गिल्लू को मुक्त करना आवश्यक है। लेखिका ने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर मुक्ति की साँस ली।

आवश्यक कागज़-पत्रों के कारण लेखिका के बाहर जाने पर कमरा बंद ही रहता था।लेखिका के लौटने पर ,जैसे ही कमरा खुलता ,वैसे ही गिल्लू अपने जाली के द्वार से भीतर आकर लेखिका के पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगता। लेखिका के कमरे से बाहर जाने पर गिल्लू भी खिड़की की खुली जाली की राह बाहर चला जाता और दिन भर गिलहरियों के झुंड का नेता बना , हर डाल पर उछलता कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता।

लेखिका को चौंकाने की इच्छा गिल्लू में न जाने कब और कैसे उत्पन्न हो गई थी ।कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता , कभी परदे की चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में ।

कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. कौवे को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी क्यों कहा गया है ?

2.गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार किस प्रकार किया गया ?

3.लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था ?

4.लेखिका को चौंकाने के लिए गिल्लू क्या करता था ?

5. गिल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता क्यों समझी गई और उसके लिए लेखिका ने क्या उपाय किया ?

धन्यवाद